

3 स्कंदगुप्त का भितरी स्तंभ अभिलेख

भितरी गोंजीपुर जिले में स्थित है।

इसमें स्कंदगुप्त के राज्यारोहण से पूर्व दिये गए युद्ध की स्पष्ट जानकारी मिलती है।

इस आक्रमण की जानकारी इसी अभिलेख से मिलती है।

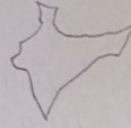
उल्लेखनीय है कि इस स्कंदगुप्त से पराजित हुए थे।

पुष्यमित्रों से भी इनके संबंधों की जानकारी मिलती है।

जिससे स्कंदगुप्त से पराजित किया था।

पुष्यमित्र मौर्य थे, मौर्यों के खिलाफ थे। इसकी जानकारी नहीं प्राप्त हो पाती।

यह अभिलेख विष्णु के मंगलाचरण से प्रारंभ होता है।



3 गुप्तगुप्त का शिला अभिलेख

510 A.D. का

स्थान: सुगार जिले में सांची के निकट अवस्थित है।

भाषा - संस्कृत

लिपि - गुप्त

इस अभिलेख में गोपराज नामक सैनिक के कुछ रचना

में शहादत होने और उसकी पत्नी के अपने पति की

चिता पर शहादत होने का उल्लेख मिलता है।

इस प्रकार अपनी उक्ति से सती प्रथा के सम्बन्ध में जानकारी देनेवाला यह प्रथम अभिलेख माना जाता है।



❖ सिक्के

- ❖ गुप्तकालीन मुद्राओं से तत्कालीन स्थिति की जानकारी मिलती है। गुप्त युग से भारतीय मुद्रा के इतिहास में नवीन युग का आरंभ माना जाता है।

गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्के पहली बार 1789 ई० में कलकत्ता के निरुद्ध 'मालिक' से मिले। परन्तु गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्कों का सबसे बड़ा ढेर राजस्थान प्रांत के भरतपुर जिले में स्थित बघाना से प्राप्त हुआ है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन भारतीय इतिहास में सबसे जल्द सोने का सिक्का गुप्तों में ही जारी किया था। स्वर्ण से के अलावा गुप्त शासकों ने चाँदी, ताम्र और शीशों के मुद्रा भी जारी किया था।

गुप्तकालीन मुद्राएँ कई प्रकार के थीं। ऐसे में सम्मिश्र रूप से कुछ प्रकारों की संख्या - 11 हैं।

सर्वाधिक प्रचलित 'धनुर्धर भाँति' के सिक्के थे।

सिक्कों से हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है;

- ❖ भौगोलिक विस्तार
- ❖ दार्शनिक जीवन
- ❖ शासक का व्यक्तित्व
- ❖ राज्यपाल के किसी महत्वपूर्ण व्यक्तित्व की जानकारी
- ❖ राजनीतिक उच्च-पुच्छ
- ❖ धातु कर्म
- ❖ आर्थिक स्थिति

❖ स्वर्ण सिक्कों के प्रकार

3 चंद्रगुप्त - I

उसने मात्र 1 प्रकार के सिक्के चलाये। जो कि 'दंष्ट्रि भाँति' के सिक्के कहलाते हैं। इसमें लिखित राजकुमारी 'कुमारदेवी' के साथ उनके पिता का चिह्न अंकित है।